श्री शांतिनाथ विधान

आशीर्वाद

गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव

वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव

आशीर्वाद एवं सम्पादन

आर्ष मार्ग संरक्षक, कविहृदय, प्रज्ञायोगी

दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव

रचयित्री

आर्यिका आस्थाश्री माताजी

प्रकाशक

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

पुस्तक का नाम	:	**श्री शांतिनाथ विधान**
आशीर्वाद	:	**गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव** **वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव**
आशीर्वाद एवं संपादन	:	**आर्षमार्ग संरक्षक प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव**
संघस्थ	:	**मुनि श्री विमलगुप्तजी, मुनि श्री विनयगुप्तजी**
रचयित्री	:	**आर्यिका आस्थाश्री माताजी**
संघस्थ	:	**क्षु. धर्मगुप्तजी, क्षु.. शान्तिगुप्तजी, क्षु. धन्यश्री माताजी** **क्षु. तीर्थश्री माताजी, ब्र. केशरबाई अम्मा जी**
सर्वाधिकार सुरक्षित	:	**रचनाकाराधीन**
प्रतियाँ	:	1000
संस्करण	:	**प्रथम, वर्ष-2020**
प्रकाशक	:	**श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)** Email : dharamrajshree@gmail.com
प्राप्ति स्थान		1. **प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव ससंघ** 2. **श्री धर्मतीर्थ, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)** **9421503332** 3. **श्री रमणलाल साहू जी, औरंगाबाद मो. 9823182922** 4. **श्री सुबोध जैन, राधेपुरी, दिल्ली 9910582687** 5. **श्री नितिन नखाते, नागपुर 8100133333** 5. **श्री राजेश जैन (कैबल वाले), नागपुर 9422816770** 6. **श्री पवन पहाड़िया, इन्दौर 8982511540**
मुद्रक	:	**राजू ग्राफिक आर्ट, जयपुर** 9829050791, Email : rajugraphicart@gmail.com

पूजन की थाली में निम्नलिखित श्लोक बोलते हुए स्वस्तिक बनायें व अंक लिखें–

श्लोक– रयणत्तयं च वंदे चउवीस जिणे च सव्वदा वंदे।
पञ्च गुरुणां वंदे चारण–चरणं च सव्वदा वंदे॥

3

2 卐 24

5

विनय पाठ

(दोहा)

प्रथम जिनेश्वर देव हो, वीतराग सर्वज्ञ।
हित उपदेशी नाथ तुम, ज्ञानरवि मर्मज्ञ॥1॥

केवलज्ञानी बन प्रभो, हरा जगत् अंधियार।
तीन लोक के बंधु बन, किया जगत् उपकार॥2॥

धर्म देशना से मिला, जग को दिव्य प्रकाश।
तव चरणों में नित रहे, यही करें अरदास॥3॥

कर्म बेड़ियाँ तोड़ने, भक्ति करें त्रयकाल।
तीन योग से हे प्रभो !, चरणों में नत भाल॥4॥

चतुर्गति भव भ्रमण से, तारों हमें जिनेश।
दयानिधि जिन ! कर दया, हरलो पाप विशेष॥5॥

प्रभुवर पूजा आपकी, सर्व रोग विनशाय।
विष भी अमृत हो प्रभो !, शत्रु मित्र बन जाय॥6॥

हलधर बलधर चक्रधर, अर्चा के उपहार।
परम्परा जिनभक्ति से, दे प्रभु पद उपहार॥7॥

बड़े पुण्य से जिन मिले, मिला प्रभु का द्वार।
मुक्त करो त्रय रोग से, विनती बारम्बार॥8॥

हम सेवक प्रभु आपके, हे अबोध ! अनजान।
राग-द्वेष अज्ञान हर, दे दो सच्चा ज्ञान॥9॥

मंगल उत्तम शरण है, मंगलमय जिनधर्म।
मंगलकारी सब गुरु, हरो हमारे कर्म॥10॥

चौबीसों जिनवर नमूँ, नमन पंच परमेश।
जिनवाणी गणधर गुरु, 'आस्था' नमें हमेश॥11॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पूजा आरंभ (हिन्दी)

ॐ जय-जय-जय - नमोस्तु-नमोस्तु-नमोस्तु।
णमो अरिहन्ताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं॥

(ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः परिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पवज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा, पुरिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि।

णमोकार मंत्र महिमा

(चौपाई)

अपवित्र या जन पवित्र हो, सुस्थित हो या दुस्थित भी हो।
नमस्कार मंत्रों को ध्यायें, पापों से छुटकारा पायें॥1॥

सर्व अवस्था में भी ध्यायें, पापी भी पावन बन जाये।
जो सुमिरे नित परमातम को, अन्दर बाहर शुचि बने वो॥2॥

अपराजित ये मंत्र कहाता, सब विघ्नों को दूर भगाता।
सब मंगल में मंगलकारी, प्रथम सुमंगल जग उपकारी॥3॥

महामंत्र णवकार हमारा, सब पापों से दे छुटकारा।
सब मंगल में प्रथम कहाता, महामंत्र मंगल कहलाता॥4॥

परम ब्रह्म परमेष्ठी वाचक, सिद्धचक्र सुन्दर बीजाक्षर।
मैं मन-वच-काया से नमता, नमस्कार मंत्रों को करता॥5॥

अष्टकर्म से मुक्त जिनेश्वर, श्रीपति जिन मंदिर परमेश्वर।
सम्यक्त्वादि गुणों के स्वामी, नमस्कार मैं करता स्वामी॥6॥

जिनवर की संस्तुति करने से, मुक्ति मिले सारे विघ्नों से।
भूतादि का भय मिट जाता, विष निर्विष निश्चित हो जाता॥7॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे कल्याणमहंयजे॥1॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनइष्टमहंयजे॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत्सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्वसाधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाममहंयजे॥3॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान

(शंभु छंद)

श्री मज्जिनेन्द्र हो विश्ववंद्य, तुम तीन जगत् के ईश्वर हो।
तुम चऊ अनंत गुण के धारी, स्याद्वाद धर्म परमेश्वर हो॥
श्री मूल संघ की विधि से मैं, अपना बहु पुण्य बढ़ाने को।
मैं मंगल पुष्प चढ़ाता हूँ, जिन पूजा यज्ञ रचाने को॥1॥

त्रैलोक्य गुरु हे जिनपुंगव !, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।
अपने स्वभाव में सुस्थित जिन, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ॥
सम्पूर्ण रत्नत्रय के धारी, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।
हे समवशरण वैभव धारी, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ॥2॥

अविराम प्रवाहित ज्ञानामृत, सागर को पुष्प समर्पित है।
निज परभावों के भेद विज्ञ, जिनवर को पुष्प समर्पित है॥
त्रिभुवन को सारे द्रव्यों के, नायक को पुष्प समर्पित है।
त्रैकालिक सर्व पदार्थों के, ज्ञायक को पुष्प समर्पित है॥3॥

पूजा के सारे द्रव्यों को, श्रुत सम्मत शुद्ध बनाया है।
यह भाव शुद्धि के अवलम्बन, द्रव्यों को शुद्ध सजाया है॥
शुचि परमात्मा का अवलम्बन, आत्मा को शुद्ध बनाता है।
उसको पाने हे जिन ! तेरी, यह पूजा भव्य रचाता है॥4॥

अर्हत् पुराण पुरुषोत्तम जिन, उनमें न सचमुच गुरुता है।
मैं भी स्वभाव से उन सम हूँ, मुझमें न निश्चय लघुता है॥

प्रभु से हो एकाकार मेरा, मैं ऐसी भक्ति रचाता हूँ।
केवल ज्ञानाग्नि में अपना, मैं पुण्य समग्र चढ़ाता हूँ॥5॥

ॐ ह्रीं जिनप्रतिमोऽपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्वस्ति मंगल पाठ

(चौपाई)

वृषभ सुमंगल करे हमारा, अजित सुमंगल करे हमारा।
संभव स्वामी मंगलकारी, अभिनंदन हैं मंगलकारी॥1॥

सुमतिनाथ हैं मंगलकारी, पद्मप्रभु हैं मंगलकारी।
श्री सुपार्श्व जिन मंगलकारी, चंद्रप्रभु हैं मंगलकारी॥2॥

पुष्पदंत हैं मंगलकारी, शीतल स्वामी मंगलकारी।
श्री श्रेयांस जिन मंगलकारी, वासुपूज्य हैं मंगलकारी॥3॥

विमलनाथ हैं मंगलकारी, श्री अनंत जिन मंगलकारी।
धर्मनाथ हैं मंगलकारी, शांतिनाथ हैं मंगलकारी॥4॥

कुंथुनाथ हैं मंगलकारी, अरहनाथ हैं मंगलकारी।
मल्लिनाथ हैं मंगलकारी, मुनिसुव्रत हैं मंगलकारी॥5॥

नमि जिनवर हैं मंगलकारी, नेमीनाथ हैं मंगलकारी।
पार्श्वनाथ हैं मंगलकारी, वीर जिनेश्वर मंगलकारी॥6॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्वस्ति मंगल विधान

(यहाँ प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पाञ्जलि क्षेपण करना चाहिए।)

नित्य अचल क्षायिक ज्ञानधारी, विशुद्ध मनःपर्यय ज्ञानधारी।
देशावधि आदि युत ऋषि मुनिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥1॥

महाकोष्ठ बीजबुद्धि पदानुसारि, संभिन्न संश्रोतृ स्वयं बुद्धिधारी।
प्रत्येकबुद्ध-बोधिबुद्ध ऋषिवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥2॥

अभिन्नदशपूर्व-चतुर्दश पूर्वी, दिव्य मतिज्ञान महाबलधारी।
अष्टांगनिमित्त ज्ञाता ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥3॥

स्पर्श-चक्षु-कर्ण-घ्राण-रसना, आदि प्रबल इन्द्रिय के धारी।
महाशक्तिवन्त जिनमुनि-यति-ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥4॥

फल-तन्तु-नीर-जंघा-श्रेणी, पुष्प-बीज-अंकुर-रवि-अग्नि-गामी।
नभ-जल-वायुचारण ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥5॥

अणु-महालघु-गुरुऋद्धिधारी, सकामरूपित्व-वशित्वधारी।
वर्द्धमान बल के धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥6॥

मन औ वचनबल-कायबल ऋद्धि, प्राकाम्य-अप्रतिघात गुणधारी।
विक्रिया-क्रियाऋद्धि धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥7॥

उग्रोग्रतप-दीप्त-तप-तप्ततपसी, अवस्थित-उग्रतप-महातपऋद्धि।
तपो-लब्धि आदि से युक्त ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥8॥

आमर्ष-सर्वौषध ऋद्धिधारी, आषीर्विष-दृष्टिविष बल धारी।
सखिल्ल-विडजल्ल-मल्लौषधियुक्त, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥9॥

क्षीरास्रवी-घृतस्रावी मुनीश्वर, अमृत-मधु-महारस के धारी।
अक्षीणआलय-महानस आदि, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥10॥

इति परमर्षि स्वस्ति मंगल विधानं

(9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

श्री नित्यमह पूजा

रचियित्री : ग. आर्यिका राजश्री माताजी

शंभु छन्द *(तर्ज– हे वीर तुम्हारे...)*

अरिहंत, सिद्ध, सूरी, पाठक, साधु और जिनवर चौबीसों।
गणधर जिन पंच बालयतिवर, जिन आगम गुरु प्रभुवर बीसों॥
माँ जिनवाणी, निर्वाणभूमि, रत्नत्रय, दशलक्षण प्यारा।
नंदीश्वर पंचमेरू जिनवर, जिनचैत्य चैत्यालय मनहारा॥
जिनधर्म जिनागम बाहुबली, सोलहकारण पूजन करता।
इनका आह्वानन करके मैं, श्री मोक्ष महल का सुख वरता॥1॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

नरेन्द्र छन्द *(तर्ज : माइन–माइन...)*

धीर वीर गंभीर प्रभु की अर्चा मैं नित करता हूँ।
निर्मल जल की त्रय धारा दे जन्म–जरा–मृत हरता हूँ॥
देव–शास्त्र–गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा॥
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा॥1॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन चरण चढ़ाता शीतलता मुझको देना।
भव का बन्धन हरने वाले भव की ज्वाला हर लेना॥ देव शास्त्र..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल मनोहर अक्षत लाया अक्षयपद पाने हेतू।
अक्षयपद को देने वाली पूजन है सबका सेतू ॥ देव शास्त्र..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जल भूमिज बहु पुष्प चढ़ाऊँ श्रद्धा से जिन गुण गाऊँ।
कामबाण को वश में करके मन ही मन मैं हर्षाऊँ ॥
देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा॥
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा॥4॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पुआ पकौडी रबड़ी घेवर आदिक व्यंजन मैं लाया।
क्षुधावेदनी के भेदन को प्रभु सन्मुख दौड़ा आया॥ देव शास्त्र..॥5॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दीपों की थाली ले आरती प्रभु की गाऊँगा।
मोहकर्म का नाश मेरा हो सम्यक्भाव बनाऊँगा॥ देव शास्त्र..॥6॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप धूपायन में खेकर मैं अष्टकर्म का हनन करूँ।
प्रभु प्रतिमा के दर्शन करके निज स्वभाव का वरण करूँ॥ देव शास्त्र..॥7॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे मीठे फल से अर्चा मनवांछित फल देती है।
प्रभु की अर्चा मेरे जीवन के संकट हर लेती है॥ देव शास्त्र..॥8॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादिक आठों द्रव्यों का सुन्दर थाल सजाया है।
पद अनर्घ्य की अभिलाषा से भक्तिभाव जगाया है॥ देव शास्त्र..॥9॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : वीतराग भगवान की, पूजा सब सुख खान।
त्रयधारा जल की करूँ, छोड़ूँ सब अभिमान॥

शांतये शांतिधारा।

दोहा– काम सृष्टि का नाश हो, पुष्पवृष्टि के साथ।
पुष्पांजलि क्षेपण करूँ, पूर्ण विनय के साथ॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : जयमाला की माल से, गूंजे जय-जयकार।
जयमाला हम पढ़ रहे, मिलकर सब नर-नार॥

शंभु छन्द *(तर्ज : ये देश है वीर...)*

श्री वीतराग सर्वज्ञ हितैषी अरिहंतों को नमन करूँ।
श्री सिद्ध सूरी पाठक साधु जिनचैत्य जिनालय नमन करूँ॥
सब द्वीपों के प्रभुवर न्यारे सीमंधर आदिक को ध्याऊँ।
श्री पंचमेरू अरू नंदीश्वर के चैत्यालय के गुण गाऊँ॥1॥

दशलक्षणधर्म हृदय धारूँ सोलहकारण भावन भाऊँ।
रत्नत्रय धारण करने के सम्यक् साधन को अपनाऊँ॥
चौदह सौ बावन गणधर जी सब ऋद्धि-सिद्धि देने वाले।
प्रभु के पाँचों कल्याणक भी सबका संकट हरने वाले॥2॥

जिनवर के सब जन्मस्थल को करता हूँ मैं शत-शत वंदन।
श्रावस्ती कौशाम्बी काशी अयोध्या चंद्रपुरी वंदन॥
काकंदी राजगृही मिथिला चंपापुर कुंडलपुर वंदन।
वैशाली सिंहपुरी कम्पिल हस्तिनापुर आदि वंदन॥3॥

अतिशय औ सिद्धक्षेत्र जी का सुमरण सब पाप तिमिर हरता।
मैं चंपा पावा ऊर्जयंत सम्मेदशिखर वंदन करता॥

पावा द्रोणा सोना तुंगी कैलाश चूलगिरी ध्याऊँगा।
रेसंदी मुक्ता उदयरत्न कुंथलगिरी को मैं जाऊँगा॥4॥

विपुलाचल पोदनपुर मथुरा तारंगा गजपंथा वंदन।
श्री सिद्धवरकूट कमलदहजी गुणावा शत्रुंजय वंदन॥
अहिक्षेत्र अणिंदा णमोकार जटवाडा पैठण चंवलेश्वर।
कचनेर चाँदखेड़ी पाटन जिन्तूर तिजारा गोमटेश्वर॥5॥

कुन्थुगिरी नवग्रह धर्मतीर्थ मांडल केशरिया को वंदन।
श्री महावीरजी पदमपुरा ऋषितीर्थ आदि को भी वंदन॥
जय ऊर्ध्व मध्य और अधोलोक के सब चैत्यालय मनहारी।
निर्वाण सिधारे पूज्य पुरुष की पूजा सब संकटहारी॥6॥

श्री राम हनु सुग्रीव नील महानील कुम्भ शम्बु ज्ञानी।
लवमदनांकुश सागर वरदत्त श्री बाहुबली स्वामी ध्यानी।
गौतम जम्बू सुधर्मा श्री त्रय पांडवसुत अनिरूद्ध नमन।
इस ढाईद्वीप से मोक्ष पधारे उन गुरूओं को है वंदन॥7॥

श्री पँचबालयति को ध्यायें नवदेवों की शरणा पायें।
सातिशय पुण्य कमाने को मंगलमय पूजा हम गायें॥
जिनगुण के अनुरागी बनकर संसार भ्रमण का नाश करें।
शिवपुर के राजतिलक हेतु यह 'राज' प्रभुगुण आश करे॥8॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : श्री जिन के आशीष से, प्रगटाऊँ निज ज्ञान।
पूजन-कीर्तन-भजन से 'राज' वरे शिव थान॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

ऋद्धि मंत्र

स्वाहा बोलते हुये प्रत्येक मंत्र में यहाँ पुष्प चढ़ायें या धूप चढ़ायें। विधान करने से पूर्व ऋद्धि मंत्र अवश्य पढ़े।

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।।1।।

1. णमो जिणाणं
2. णमो ओहि-जिणाणं
3. णमो परमोहि-जिणाणं
4. णमो सव्वोहि-जिणाणं
5. णमो अणंतोहि-जिणाणं
6. णमो कोट्ठ-बुद्धीणं
7. णमो बीज-बुद्धीणं
8. णमो पादाणु-सारीणं
9. णमो संभिण्ण-सोदारणं
10. णमो सयं-बुद्धाणं
11. णमो पत्तेय-बुद्धाणं
12. णमो बोहिय-बुद्धाणं
13. णमो उजु-मदीणं
14. णमो विउल-मदीणं
15. णमो दस पुव्वीणं
16. णमो चउदस-पुव्वीणं
17. णमो अट्ठंग-महा-णिमित्त-कुसलाणं
18. णमो विउव्वइड्ढि-पत्ताणं
19. णमो विज्जाहराणं
20. णमो चारणाणं
21. णमो पण्ण-समणाणं
22. णमो आगासगामीणं
23. णमो आसी-विसाणं
24. णमो दिट्ठिविसाणं
25. णमो उग्ग-तवाणं
26. णमो दित्त-तवाणं
27. णमो तत्त-तवाणं
28. णमो महा-तवाणं
29. णमो घोर-तवाणं
30. णमो घोर-गुणाणं
31. णमो घोर-परक्कमाणं
32. णमो घोर-गुण-बंभयारीणं
33. णमो आमोसहि-पत्ताणं
34. णमो खेल्लोसहि-पत्ताणं
35. णमो जल्लोसहि-पत्ताणं
36. णमो विप्पोसहि-पत्ताणं
37. णमो सव्वोसहि-पत्ताणं
38. णमो मण-बलीणं
39. णमो वचि-बलीणं
40. णमो काय-बलीणं
41. णमो खीर-सवीणं
42. णमो सप्पि-सवीणं
43. णमो महुर सवीणं
44. णमो अमिय-सवीणं
45. णमो अक्खीण महाणसाणं
46. णमो वड्ढमाणाणं
47. णमो सिद्धायदणाणं
48. णमो सव्व साहूणं

(णमो भयवदो-महदि-महावीर-वड्ढमाण-बुद्ध-रिसीणो चेदि।)

इति पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

भगवान श्री शांतिनाथ का जीवन-दर्पण

पूर्व भव

1. श्रीषेण राजा	2. उत्तरकुरु भोगभूमि में आर्य (पूर्व धातकी खंड में)
3. सौधर्म स्वर्ग में श्रीप्रभ देव	4. अमिततेज विद्याधर
5. आनत स्वर्ग में रविचूल देव	6. अपराजित बलभद्र
7. अच्युत स्वर्ग में इन्द्र	8. वज्रायुध चक्रवर्ती
9. ऊर्ध्व ग्रैवेयक में अहमिन्द्र	10. मेघरथ राजा
11. सर्वार्थसिद्धी में अहमिन्द्र	12. भगवान शांतिनाथ

दादा	-	महाराज अजितसेन
दादी	-	रानी प्रियदर्शना
पिता	-	महाराज विश्वसेन
माता	-	महारानी ऐरादेवी
वंश	-	गुरु वंश
गोत्र	-	काश्यप
जन्मभूमि	-	कुरुजांगल देश की राजधानी हस्तिनापुर
तीन पद	-	तीर्थंकर, चक्रवर्ती तथा कामदेव
आयु	-	1 लाख वर्ष
ऊँचाई	-	चालीस धनुष
चिह्न	-	हिरण
शरीर की कांति	-	तप्त सोने जैसी
कुमारकाल	-	25,000 वर्ष
राज्यकाल	-	25,000 वर्ष
चक्रवर्तीकाल	-	25,000 वर्ष
छद्मस्थ काल	-	1000 वर्ष
अरिहंत अवस्था	-	1000 वर्ष कर्म, 25,000 वर्ष
योग निरोध	-	मोक्ष गमन के 1 माह पूर्व
चार कल्याणक	-	हस्तिनापुर में
मोक्ष भूमि	-	सम्मेदशिखर में कुंदप्रभ टोंक
वैराग्य कारण	-	दर्पण में दो प्रतिबिम्ब दिखने से
गणधर	-	चक्रायुध (भाई) आदि 36
विशेषता	-	भगवान शांतिनाथ के पूर्व 7 बार इस भरतक्षेत्र के आर्यखंड में धर्म का विच्छेद होने से दीक्षा लेने वालों का अभाव हो गया तथा धर्मरूपी सूर्य समाप्त हो गया, परन्तु भगवान शांतिनाथ के समय से आज तक धर्म परम्परा अविच्छिन्न रूप से चली आ रही है। अतः भगवान शांतिनाथ को भी भगवान आदिनाथ के समान आद्यगुरु कहा जाता है।

श्री शांति भक्ति

न स्नेहाच्छरणं प्रयान्ति भगवन् ! पादद्वयं ते प्रजाः,
हेतुस्तत्र विचित्र दुःख निचयः संसार घोरार्णवः।
अत्यन्त स्फुरदुग्र रश्मि निकर व्याकीर्ण भूमण्डलो,
ग्रैष्मः कारयतीन्दु पाद सलिल-च्छायानुरागं रविः ॥1॥

(प्रणाम करने का ऐहिक फल)

क्रुद्धाशीर्विष दष्ट दुर्जय विष ज्वालावली विक्रमो,
विद्या भेषज मन्त्र तोय हवनै-र्याति प्रशान्तिं यथा।
तद् वत्ते चरणारुणाम्बुज युग स्तोत्रोन्मुखानां नृणाम्,
विघ्नाः कायविनायकाश्च सहसा शाम्यन्त्यहो विस्मयः ॥2॥

(प्रणाम करने का फल)

सन्तप्तोत्तम काञ्चन क्षितिधर श्री स्पर्द्धि गौरद्युते।
पुंसां त्वच्चरणप्रणाम करणात् पीडाः प्रयान्तिक्षयं ॥
उद्यद्भास्कर विस्फुरत्कर शत व्याघात निष्कासिता।
नाना देहि विलोचन - द्युतिहरा शीघ्रं यथा शर्वरी ॥3॥

(मुक्ति का कारण जिन स्तुति)

त्रैलोक्येश्वर भंग लब्ध विजया दत्यन्त रौद्रात्मकान्।
नाना जन्म शतान्तरेषु पुरतो जीवस्य संसारिणः ॥
को वा प्रस्खलतीह केन विधिना कालोग्र दावानलान्।
न स्याच्चेत्तव पाद-पद्म युगल स्तुत्यापगा वारणम् ॥4॥

(स्तुति से असाध्य रोगों का नाश)

लोकालोक निरन्तर प्रवितत् ज्ञानैक मूर्ते विभो !
नाना रत्न पिनद्ध दण्ड रुचिर श्वेतातपत्रत्रय।

त्वत्पाद द्वय पूत गीत रवतः शीघ्रं द्रवन्त्यामया।
दर्पाध्मात-मृगेन्द्रभीम निनदाद् वन्या यथा कुञ्जराः॥5॥

(स्तुति से अनन्त सुख)

दिव्य स्त्री नयनाभिराम विपुल श्री मेरु चूडामणे,
भास्वद् बाल दिवाकर-द्युतिहर प्राणीष्ट भामण्डल।
अव्याबाध मचिन्त्यसार मतुलं त्यक्तोपमं शाश्वतम्,
सौख्यं त्वच्चरणारविन्द युगल स्तुत्यैव सम्प्राप्यते॥6॥

(भगवान के चरण-कमल प्रसाद से पापों का नाश)

यावन्नोदयते प्रभा परिकरः श्रीभास्करो भासयंस्,
तावद् धारयतीह पंकज वनं निद्रातिभार श्रमम्।
यावत्त्वच्चरणद्वयस्य भगवन् ! न स्यात् प्रसादोदय-
स्तावज्जीव निकाय एष वहति प्रायेण पापं महत्॥7॥

(स्तुति फल याचना)

शान्तिं शान्ति जिनेन्द्र शान्त मनसस्त्वत्पाद पद्माश्रयात्,
संप्राप्ताः पृथिवी तलेषु बहवः शान्त्यर्थिनः प्राणिनः।
कारुण्यान् मम भक्तिकस्य च विभो ! दृष्टिं प्रसन्नां कुरु,
त्वत्पादद्वय दैवतस्य गदतः शान्त्यष्टकं भक्तितः॥8॥

***

48 कोष्ठक
श्री शांति नाथ विधान मांडला

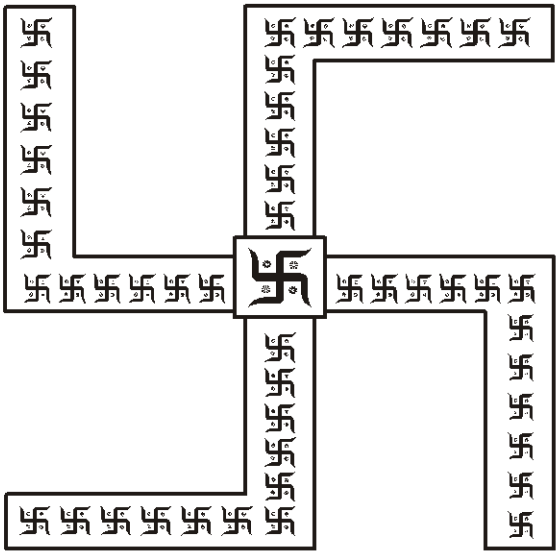

कुल 48 अर्घ, दो पूर्णार्घ
इसमें आप उत्तम से उत्तम अर्घ, ध्वजा, श्रीफल,
आदि चढ़ाकर पुण्यार्जन करें।

श्री शांतिनाथ विधान

स्थापना (गीता छन्द)

हे शांति जिन ! हे शांति जिन, शांति करो त्रय लोक में।
त्रय लोक तुमको पूजता, संकट हरो त्रय लोक के॥
तीर्थेश मन्मथ चक्रधर, उनका करें आह्वान हम।
शांति करो मन में सदा, मन में विराजों आज मम॥

ॐ ह्रीं तीर्थेश चक्री कामदेव श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शेर छंद)

श्री शांतिनाथ का करें अभिषेक शांति से।
त्रय रोग भक्त के हरो हे नाथ ! शांति से॥
हे धर्मतीर्थ नाथ शांति ! शांति दीजिये।
संसार के दुःखों से हमें पार कीजिये॥1॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम शांतिनाथ की करें चंदन से अर्चना।
हमने चढ़ाया गंध हरने कर्म वंचना॥ हे धर्मतीर्थ..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हीरे व मोती अक्षतों के पुंज चढ़ायें।
वरदान शांतिनाथ से हम शांति का पायें॥ हे धर्मतीर्थ..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्पूर्ण विश्व के विशेष पुष्प चुनायें।
षट्खंड जयी नाथ के चरणों में चढ़ायें॥ हे धर्मतीर्थ..॥4॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक बनी मिठाईयाँ दिखती मनोज्ञ हैं।
शुद्धि से हम चढ़ायें जो पूजा के योग्य है॥
हे धर्मतीर्थ नाथ शांति ! शांति दीजिये।
संसार के दुःखों से हमें पार कीजिये॥5॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम ज्ञान पाने नाथ से दीपार्चना करें।
संध्यादि तीन काल में जिनार्चना करें॥ हे धर्मतीर्थ..॥6॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

पावक में खे रहे हैं धूप मंत्र बोल के।
श्री ॐ ह्रीं शांतिनाथ नाम बोल के॥ हे धर्मतीर्थ..॥7॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम आम जाम श्रीफलों के थाल ला रहे।
निज मोक्षफल की कामना से फल चढ़ा रहे॥ हे धर्मतीर्थ..॥8॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थेश चक्री कामदेव शांतिनाथ जी।
हर भक्त के हृदय में बसे शांतिनाथ जी॥ हे धर्मतीर्थ..॥9॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान प्रारम्भ

दोहा- शांति पाने हम करें, शांतिनाथ विधान।
शांतिनाथ प्रभु शांति दो, इस हित करें विधान॥

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

नरेन्द्र छंद

हस्तिनागपुर में प्रभु जन्मे, तीन लोक हर्षाये।
शांतिनाथ का जन्म मनाने, स्वर्गों से सुर आयें॥

शांतिनाथ शांति के दाता, जग को शांति दिलायें।
शांति मिले प्रभु के चरणों में, शांति विधान रचायें॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंबुद्ध श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विश्वसेन के नंदन का नित, करे विश्व अभिनंदन।
ऐरा माँ के राजकुँवर को, करता है जग वंदन॥ शांतिनाथ..॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्ववंद्य श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिनाथ के बालरूप को, निरख-निरख हर्षाये।
मात-पिता प्रभुवर को पाकर, अतिशय हर्ष मनाये॥ शांतिनाथ..॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं मनोज्ञ बालरूप श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक उत्सव से प्रभु के, पंच कल्याण मनाये।
पंच पाप से मुक्ति पाकर, पंचम गति को पाये॥ शांतिनाथ..॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं पंचकल्याणक पूजित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप पाँचवें चक्रवर्ती हो, षट् खंडों के स्वामी।
तृण समान सब वैभव छोड़ा, बनने त्रिभुवन स्वामी॥ शांतिनाथ..॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं पंचम चक्रवर्ती श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव प्रभु आप बारहवें, धर्म सभा के स्वामी।
धर्म अखंड चला प्रभु तुमसे, कहती माँ जिनवाणी॥ शांतिनाथ..॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं द्वादश कामदेव श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वश्रेष्ठ परमाणु जग के, प्रभु का तन बन जाये।
तीर्थंकर जैसी सुन्दरता, दूजा कोई न पाये॥ शांतिनाथ..॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनुपम रूपवन्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गिरी सम्मेद शिखर पे भगवन्, कर्म अघाति नशाये।
कूट कुंदप्रभ शांतिनाथ का, सिद्धक्षेत्र कहलाये॥ शांतिनाथ..॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्ध स्वरूपाय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल छंद

दुःख संकट में शांति प्रभु को ध्याइये।
प्रभु पूजा से अपने कष्ट मिटाइये ।।
शांति प्रदाता प्रभु का शांति विधान है।
पूजक का निश्चय करता उत्थान ये।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं दुःख संकट हरणाय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति सुधा हित भव्य प्रभु को ध्या रहे।
शांतिनाथ के गुण गा शांति पा रहे।। शांति.....।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं शांतिसुधा प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आपस में झगड़ा होता कटु बोल से।
आप बचाते प्रभुवर कड़वे बोल से।। शांति.....।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं मधुरवाणी प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख-शांति हित हम जिनायतन में गये।
आप्त ! तुम्हें हम पुण्योदय से पा गये।। शांति.....।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं आप्त रूपाय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूल हुई जो भगवन् सारी माफ हो।
सद्बुद्धि दो मेरा शिवपथ साफ हो।। शांति.....।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं सद्बुद्धि प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुःख संकट या कैसी भी हो आपदा।
आप शरण हम छोड़ेंगे ना सर्वदा।। शांति.....।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वजीव शरण प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु भक्ति नित चित्त बसे मम भावना।
जिन पद पाने की हर दम है कामना।। शांति.....।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनभक्ति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु चरणों में तन-मन को शांति मिले।
प्रभु भक्ति से मुक्ति की चाबी मिले।। शांति.....।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वशांति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

कितनी भी पूजा करो, और करो उपवास।
समता और शांति बिना, व्यर्थ रहे उपवास॥
शांतिनाथ का हम करे, उत्तम शांति विधान।
प्रभु की पूजा अर्चना, करती शांति प्रदान॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं समता शांतिप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ढ़ोंग दिखावा व्यर्थ कर, किया पाप का बंध।
किया प्रदर्शन धर्म में, हरो प्रभू मम बंध॥ शांतिनाथ..॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वपाप हराय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन से भक्ति ना करी, मन से किया न जाप।
वचनों से ना भजन कर, किया स्वयं बहु पाप॥ शांतिनाथ..॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्रययोग शुद्धि प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग-द्वेष के वश किया, मैंने अति संक्लेश।
क्षमा करो मम पाप सब, नष्ट होय सब क्लेश॥ शांतिनाथ..॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्षमाप्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंधा हो अज्ञान में, किया अकारण क्रोध।
क्रोध शांत कैसे करूँ, दो प्रभु मुझको बोध॥ शांतिनाथ..॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्रोधकषाय निवारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान कषाय किया बहुत, किया सदा अपमान।
देव गुरु नवदेव का, किया नहीं सम्मान॥ शांतिनाथ..॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं मानकषाय निवारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छोटी-छोटी बात में, करके मायाचार।
कपट जाल माया रची, बढ़ा लिया संसार॥ शांतिनाथ..॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं मायाकषाय निवारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ कषायों में प्रबल, सारे पाप कराय।
लोभ तजे संतोष धर, इस हित प्रभु को ध्याय॥
शांतिनाथ का हम करे, उत्तम शांति विधान।
प्रभु की पूजा अर्चना, करती शांति प्रदान॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं लोभकषाय निवारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सखी छंद

जब रोग असाध्य सताये, तब धर्म नहीं मन भाये।
कानों का दर्द रुलाये, दाँतों का दर्द सताये॥
सिर दर्द व चक्कर आये, नेनों के रोग रूलाये।
हम शांति विधान रचाये, रोगों से मुक्ति पाये॥25॥

ॐ ह्रीं अर्हं कर्णदन्तादि सर्व असाध्य रोगहराय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्दी खाँसी गर होवे, या बहु प्रकार ज्वर होवे।
या दिल का दौरा आये, या शुगर बी.पी. बढ़ जाये॥
कोमा लकवा हो जाये, या वचन बंद हो जाये ॥ हम..॥26॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व विषम व्याधिहराय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुःखते जब पीठ व गर्दन, तब काम न आवे सर्जन।
जब दुःखे रीड़ की हड्डी, या कमर पैर की हड्डी॥
जब पेट दर्द हो जाये, पाचन शक्ति मर जाये ॥ हम..॥27॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वरोग पीड़ा निवारणाय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किड़नी पथरी की व्याधी, या हो लीवर की व्याधी।
कैंसर जब होता तन में, तब होय मरण भय मन में॥
जोड़ो का दर्द सताये, मंदिर भी जा ना पाये॥ हम..॥28॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व प्राणांतक रोगहराय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुर्घटना जब घट जाये, आकस्मिक दुःख आ जाये।
कभी हाथ पैर कट जाये, रो रोकर समय बिताये॥
धन जन हानि हो जाये, जीते जी तब मर जाये ॥
हम शांति विधान रचाये, रोगों से मुक्ति पाये॥29॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व दुर्घटना धनहानि निवारणाय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुःख में जग काम न आवे, सुख में साथी बन जावे।
जब पाप उदय अति आवे, परिजन दुश्मन बन जावे॥
मानसिक तनाव जब आये, चिंताहि चिता बन जाये॥ हम.. ॥30॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वपरिजन मैत्रीकराय मनोव्याधि निवारकाय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सद्बुद्धि ऐसी पाये, कभी प्रभु से दूर न जाये।
चाहे कुछ भी हो जाये, मन में जिन भक्ति समाये॥
सुख आये या दुःख आये, हम प्रभू को भूल न जाये॥ हम.. ॥31॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वकाल मध्यभक्ति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे शांतिनाथ परमेश्वर !, हो कामदेव तीर्थेश्वर।
हम तुमको हृदय बसाये, संकट में ना घबराये॥
मन वच काया से ध्यायें, प्रभु चरणन् शीश झुकाये॥ हम.. ॥32॥

ॐ ह्रीं अर्हं षोडश तीर्थंकर श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

कामदेव चक्री जिनस्वामी, तीर्थंकर शांतिश्वर स्वामी।
हम सब शांति विधान रचायें, श्रीफलादि संग अर्घ चढ़ायें॥33॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्रयपदधारी श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धक्षेत्र व तीर्थक्षेत्र में, शांतिनाथ हैं सर्व क्षेत्र में।
हम सब शांति विधान रचायें, श्रीफलादि संग अर्घ चढ़ायें।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व सिद्धक्षेत्र तीर्थक्षेत्र नगर जिनालय स्थित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति विधान कर प्रज्ञा पायें, सद्बुद्धि हम पाने आये। हम...।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रज्ञा प्रदायकाय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये विधान धनवृद्धि कराये, अर्थसिद्धि निर्दोष कराये। हम...।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं अर्थ सिद्धी प्रदायकाय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म क्षेत्र में द्रव्य लगायें, दान धर्म नित करते जायें। हम...।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वलक्ष्मी वृद्धिकारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रैकालिक प्रभु भक्ति रचायें, उसका फल अच्छा हम पायें। हम...।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिकाल पूजा भक्तिकरण समर्थाय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

हस्तिनागपुर तीर्थ में, हुये चार कल्याण।
प्रभु को अर्घ चढ़ाय हम, करते शांति विधान।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं हस्तिनागपुर तीर्थ क्षेत्र विराजित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्मेदाचल तीर्थ से, पाया पद निर्वाण।
शांति सिद्ध जिनदेव का, करते यहाँ विधान।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं सम्मेदाचल तीर्थ क्षेत्र विराजित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिगरी में शोभते, प्रभुवर शांतिनाथ।
हम प्रभु की पूजा करें, पाने भव-भव साथ॥41॥

ॐ ह्रीं अर्हं शांतिगिरी कोथली क्षेत्र विराजित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रामटेक श्री क्षेत्र में, शांतिनाथ भगवान।
पूजें हम प्रभु आपको, करते नित गुणगान॥42॥

ॐ ह्रीं अर्हं रामटेक क्षेत्र विराजित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बजरंग गढ श्री क्षेत्र में, सुन्दर शांतिनाथ।
अष्टद्रव्य से हम जजें, सदा झुकावें माथ॥43॥

ॐ ह्रीं अर्हं बजरंग गढ क्षेत्र विराजित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

झालरापाटन जहाँ, ऊँचे शांतिनाथ।
नमन सदा हो आपको, अष्टद्रव्य के साथ॥44॥

ॐ ह्रीं अर्हं झालरापाटन क्षेत्र विराजित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भोजपुर भोपाल में, शांतिनाथ तीर्थेश।
पूजा कर हम आपकी, पायें सिद्ध प्रदेश॥45॥

ॐ ह्रीं अर्हं भोजपुर क्षेत्र विराजित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नगर औरंगाबाद में, बैठे शांतिनाथ।
पूजें हम प्रभु आपको, झुका चरण में माथ॥46॥

ॐ ह्रीं अर्हं औरंगाबाद क्षेत्र विराजित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजनगिरी श्री क्षेत्र के, जिनवर शांतिनाथ।
हम सेवक पूजा करें, शांति पाने नाथ॥47॥

ॐ ह्रीं अर्हं अंजनगिरी क्षेत्र विराजित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मतीर्थ में आपकी, प्रतिमा बनी विशाल।
चढ़ा रहे हम आपको, अष्टद्रव्य की थाल।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्मतीर्थ अतिशय क्षेत्र विराजित धर्मतीर्थ साम्राज्य नायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (शेर छंद)

श्री शांतिनाथ से अखण्ड धर्म चल रहा।
प्रत्येक प्राणी शांति पाने को मचल रहा।।
श्रीफल में ध्वजादि लगा पूर्णार्घ चढ़ायें।
श्री शांतिनाथ नाम का हम बिगुल बजायें।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्मतीर्थ अतिशय क्षेत्र विराजित अखंड धर्मप्रवर्तक सर्व रोग, शोक, संकट, अपमृत्यु, दुर्घटना, अशांति कोरोना रोग निवारक, सुख, शांति, आरोग्य, सद्बुद्धि, धन–धान्य प्रदायक षोडशोत्तम तीर्थंकर चक्री, कामदेव श्री धर्मतीर्थ साम्राज्य नायक शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– शांतिनाथ के चरण में, करते शांतिधार।
प्रभु के पावन चरण में, पुष्पों के ये हार।।

शांतये शांतिधारा/दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय जगत शांतिकराय सर्वोपद्रव शांतिं कुरु–कुरु ह्रीं नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

सोरठा– जय–जय शांतिनाथ, जयमाला प्रभू की पढ़ें।
पायें शांति अपार, सर्व अशांति दूर हो।।

नरेन्द्र छंद

जय–जय शांतिनाथ जिनेश्वर, तुम हो शांतिप्रदाता।
शांतिनाथ ऐसे तीर्थंकर, जिनको जन–जन ध्याता।।

हमें शांति दो हे शांतीश्वर !, निशदिन तुमको ध्यायें।
शांति से शांति विधान कर, अद्भुत शांति पायें॥1॥

पूर्व भवों में शांति प्रभु ने, करी तपस्या भारी।
पूजा करते शांति प्रभु की, सर्व लोक संसारी॥
बने आप श्रीषेण राज तब, दिया दान मुनियों को।
उसी दान के महापुण्य से, पाया भोगभूमि को॥2॥

प्रथम स्वर्ग में बने श्रीप्रभ, स्वर्ग सुखों को पाया।
अमिततेज विद्याधर बनकर, अमित सुखों को पाया॥
करी समाधि अंत समय में, स्वर्ग तेरहवाँ पाया।
अपराजित बलभद्र बने वो, संयम को अपनाया॥3॥

अच्युतेन्द्र मुनिराज बने तब, उत्सव नित्य मनायें।
चक्री से वज्रायुध मुनि बन, ग्रैवेयक में जायें॥
मेघराज मुनि करे तपस्या, सोलहकारण भाये।
तीर्थंकर प्रकृति को बांधे, चरम स्वर्ग अब पाये॥4॥

स्वर्ग तजा माँ के उर आये, ऐरा माँ हर्षाये।
विश्वसेन पितु के आंगन में, धनपति रत्न गिराये॥
नगर हस्तिनापुर के राजा, शांतिनाथ कहलाये।
कामदेव तीर्थंकर चक्री, सबको शांति दिलाये॥5॥

जब से आप धरा पर आये, धर्म अखंड चलाया।
हस्तिनागपुर में प्रभु जन्मे, सारा जग हर्षाया॥
विश्वसेन ऐरा नंदन से, हुई विश्व में शांती।
इसलिये हर प्राणी भगवन्, ढूँढ़े आतम शांती॥6॥

सच्चे मन से जो प्रभुवर का, शांति विधान रचाये।
बिन माँगे ही उसकी इच्छा, पूरण सब हो जाये॥
अनपढ़ भी बहु ज्ञानी बनकर, जग में नाम कमाये।
व्यापारी धनश्री पाकर के, दान धरम करवाये॥7॥

सर्व कार्य में मिले सफलता, क्रम से शिवपद पाये।
धर्म अर्थ व काम मोक्ष का, वो सच्चा फल पाये॥
'आस्था' से जो शांति मंत्र का, जाप सदैव रचाये।
त्रय गुप्तिधर समिति व्रतों से, जिनवर सम बन जाये॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व कोरोना रोग, शोक, अशांति, संकटहराय, सुख, शांति, ऐश्वर्य, आरोग्य श्री प्रदायकाय, ऋद्धि-सिद्धि, व्यापार वृद्धि, कामना पूर्ण करणाय, कल्पतरु, धर्मतीर्थ अतिशय क्षेत्र विराजित श्री धर्मतीर्थ साम्राज्य नायक, सुज्ञान प्रदायक अखंड शांतिदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांतिनाथ भगवान को 'आस्था' करे प्रणाम।
आस्था से आस्था वरे, निश्चय मुक्ति धाम॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

आरती

(तर्ज - माईन-माईन...)

शांति विधान रचाकर हम सब, जगमग दीप जलायें।
शांतिनाथ की आरती करके, सुख-शांति पा जायें॥
बोलो शांतिनाथ की जय-2

नगर हस्तिनापुर के राजा, तीन पदों के धारी।
मोक्ष गये सम्मेदशिखर से, वरली शिवपुर नारी॥
धर्म सूर्य ऐसा चमकाया-2, अविरल चलता आये। शांतिनाथ....
दुःख संकट में तुमको स्वामी, भक्त सदा ही ध्यायें।
भव-भव की सारी विपदायें, क्षणभर में मिट जायें॥
शांतिनाथ है नाम तुम्हारा-2, सबको शांति दिलाये। शांतिनाथ....
भक्ति की झंकार बजे यो, जैसे घुँघरु बाजे।
छम-छम नृत्य रचायें भविजन, ढोल ढमाढम बाजे॥
केवल ज्योति जगाने भगवन्-2, 'आस्था' शीश झुकाये। शांतिनाथ....

***

समुच्चय अर्घ

(शेर छंद)

मैं पूजता अरिहंत सिद्ध सूरि को सदा।
उवज्झाय सर्व साधु और शारदा मुदा।।
गणधर गुरु चरण की नित्य अर्चना करूँ।
दश धर्म सोलह भावना की अर्चना करूँ।।1।।

अरहंत भाषितार्थ दया धर्म को भजूँ।
श्री तीन रत्न रूप मोक्ष धर्म को जजूँ।।
त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य को ध्याऊँ।
चैत्यालयों का ध्यान लगा अर्घ चढ़ाऊँ।।2।।

सब सिद्ध क्षेत्र तीर्थ क्षेत्र को भजूँ सदा।
औ तीन लोक के समस्त तीर्थ सर्वदा।।
चौबीस जिनवरों व बीस नाथ को ध्याऊँ।
जल आदि अष्ट द्रव्य ले पूर्णार्घ चढ़ाऊँ।।3।।

दोहा : जल आदिक वसु द्रव्य की, लेकर आये थाल।
महाअर्घ अर्पण करें, प्रभु को नमें त्रिकाल।।

ॐ ह्रीं द्रव्य सहित भावपूजा भाववंदना त्रिकाल पूजा त्रिकाल वंदना करे करावै भावना भावै श्री अरहंतसिद्ध आचार्य उपाध्यायसर्वसाधु पंच परमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलाक्षणिकधर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। विदेह क्षेत्रस्थ विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। जल, थल, आकाश, गुफा, पहाड़, सरोवर, नगर-नगरी, ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक, अधोलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः। पाँच भरत पाँच ऐरावत संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनराजेभ्यो नमः। नंदीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरू संबंधी अस्सी जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलाशगिरी, चंपापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिर, मथुरा, गजपंथा, मांगीतुंगी, तपोभूमि आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः।

जैनबद्री, मूढ़बद्री, देवगढ़, चंदेरी, पपौरा, हस्तिनापुर, अयोध्या, कुंथुगिरी, पुष्पगिरी, अंजनगिरी, धर्मतीर्थ, वरूर,राजगृही, तारंगा, चमत्कार, महावीरजी, पदमपुरा, तिजारा, अहिच्क्षेत्र, कचनेर, जटवाड़ा, पैठण, गोम्मटेश्वर, चंवलेश्वर, बिजौलिया, चांदखेड़ी, पाटन, कुण्डलपुर, अणिन्दा वृषभदेव णमोकार ऋषि तीर्थ आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण ऋद्धिधारी सप्त परमर्षिभ्यो नमः। भूत–भविष्यत–वर्तमान काल संबंधी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपावंतं श्री वृषभादि महावीरपर्यंतं चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारत देशे..... प्रान्ते–नगरे..... मासानांमासे.....मासे..... पक्षे..... तिथौ..... वासरे मुनि आर्यिकाणां श्रावक श्राविकाणां, क्षुल्लक, क्षुल्लिकानां, सकल कर्मक्षयार्थं (जलधारा) जलादि महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(27 श्वासोच्छवास में 9 बार णमोकार मंत्र पढ़ें।)

शांतिपाठ (हिन्दी)

चौपाई

(शांतिपाठ बोलते समय पुष्पाञ्जलि क्षेपण करते रहें)

शशि सम निर्मल जिन मुखधारी, शील सहस्र गुणों के धारी।
लक्षण वसु शत त्रयपदधारी, कमल नयन शांति सुखकारी॥1॥

(नोट–यहाँ शांतिधारा करें।)

शांतिनाथ पंचम चक्रीश्वर, पूजें तुमको इन्द्र मुनीश्वर।
शांति करो हे शांति ! जिनेश्वर, जगत् शांतिहित नमते गणधर॥2॥

आठों प्रातिहार्य मनहारी, ये जिन वैभव हैं सुखकारी।
तरु अशोक पुष्पों की वर्षा, दिव्य ध्वनि सिंहासन रवि सा॥3॥

छत्र चँवर भामंडल चम–चम, देव–दुंदुभि बजती दुम–दुम।
शांति करो त्रय जग में स्वामी, शीश झुकाता तुमको स्वामी॥4॥

आप अनंत चतुष्टय धारी, मंगल द्रव्य आठ अघहारी।
सर्व विघ्न प्रभु आप नशाओं, हे शांति प्रभु ! शांति दिलाओ॥5॥

पूजक राजा शांति पायें, मुनि तपस्वी शांति पायें।
राष्ट्र नगर में शांति छाये, शांति जगत् में हे जिन ! आये॥6॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् (9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

(दोनों हाथ में चावल या पुष्प लेकर करबद्ध हो विसर्जन पाठ पढ़ें मंत्र के साथ पुष्पाञ्जलि करें)

विसर्जन पाठ

(दोहा)

जाने अनजाने हुई, प्रभु पूजा में चूक।
मैं अज्ञान अबोध हूँ, क्षमा करो सब चूक॥1॥

जानूँ नहीं आह्वान मैं, पूजा से अनजान।
ज्ञान विसर्जन का नहीं, क्षमा करो भगवान॥2॥

अक्षर पद और मात्रा, व्यंजनादि सब शब्द।
कम ज्यादा कुछ कह दिया, छूट गये हों शब्द॥3॥

मिथ्या हो सब दोष मम, शरण रखो भगवान।
तव पूजा करके प्रभु, बन जाऊँ भगवान॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं अस्मिन् पूजा विधाने आगच्छत सर्वे देवाः स्वस्थाने गच्छतः-
3जः-3स्वाहा।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(9 बार णमोकार का जाप करें।)

(नोट-दीपक लेकर श्रीजी की मंगल आरती करें।)

(यह दोहा बोलते हुए आशिका ग्रहण करें)

दोहा : गंध पुष्प प्रभु रज यही, इसको शीश झुकाय।
पुष्प लिये आह्वान के, अपने शीश लगाय॥

(तुभ्यम् नमस्त्रि बोलते हुये भगवान को गुरु को नमस्कार करें।)

***

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

धर्मतीर्थ मार्ग, कचनेर अतिशय क्षेत्र के पास, जिला-औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

आर्ष मार्ष संरक्षक, कवि हृदय, प्रज्ञायोगी, दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव ससंघ का प्रकाशित साहित्य

1. श्री रत्नत्रय आराधना
2. श्री लघु रत्नत्रय आराधना
3. श्री वृहद् रत्नत्रय विधान
4. श्री लघु रत्नत्रय विधान
5. श्री रत्नत्रय भक्ति सरिता
6. श्री रत्नत्रय संस्कार प्रवेशिका (भाग 1)
7. श्री रत्नत्रय संस्कार प्रवेशिका (भाग 2)
8. श्री वृहद गणधर वलय विधान
9. लघु गणधर वलय विधान
10. श्री वृहद नवग्रह शान्ति विधान
11. श्री सूर्यग्रह शान्ति विधान (श्री पद्मप्रभु आराधना)
12. श्री चन्द्रग्रह शान्ति विधान (श्री चन्द्रप्रभु आराधना)
13. श्री मंगलग्रह शान्ति विधान (श्री वासुपूज्य आराधना)
14. श्री बुधग्रह शान्ति विधान (श्री शांतिनाथ आराधना)
15. श्री गुरुग्रह शान्ति विधान (श्री आदिनाथ आराधना)
16. श्री शुक्रग्रह शान्ति विधान (श्री पुष्पदंत आराधना)
17. श्री शनिग्रह शान्ति विधान (श्री मुनिसुव्रतनाथ आराधना)
18. श्री राहूग्रह शान्ति विधान (श्री नेमिनाथ आराधना)
19. श्री केतुग्रह शान्ति विधान (श्री पार्श्वनाथ आराधना)
20. धर्मसूर्य श्री पद्मप्रभ-वासुपूज्य-नेमिनाथ विधान
21. श्री नवग्रह शान्ति चालीसा (बड़ी)
22. श्री नवग्रह शान्ति चालीसा (छोटी)
23. श्री पंचकल्याणक विधान
24. श्री त्रिकाल चौबीसी (लक्ष्मी प्राप्ति) रोट तीज विधान
25. श्री तीस चौबीसी (महालक्ष्मी प्राप्ति) विधान
26. श्री सर्व तीर्थंकर विधान
27. श्री विजय पताका विधान
28. श्री सम्मेद शिखर विधान
29. श्री पंच परमेष्ठी (सर्व सिद्धि) विधान
30. श्री विद्या प्राप्ति विधान
31. श्री श्रुत स्कन्ध विधान
32. श्री तत्त्वार्थ सूत्र विधान
33. श्री भक्तामर विधान
34. श्री कल्याण मंदिर विधान
35. श्री एकीभाव विधान
36. श्री विषापहार विधान
37. श्री णमोकार विधान
38. श्री जिन सहस्त्रनाम विधान

39. श्री चौबीस तीर्थंकर, लक्ष्मी प्राप्ति बाहुबली-धर्मतीर्थ एवं आचार्य गुप्तिनंदी विधान
40. श्री चन्द्रप्रभु विधान
41. श्री शान्तिनाथ विधान
42. श्री सर्व दोष प्रायश्चित्त विधान
43. श्री रविव्रत विधान
44. श्री पंचमेरु-दशलक्षण-सोलहकारण विधान
45. श्री नंदीश्वर विधान
46. श्री चन्दन षष्ठी व्रत विधान
47. आचार्य शांतिसागर विधान
48. आचार्य श्री कुन्थुसागर विधान
49. आचार्य श्री कनकनंदी विधान
50. आचार्य श्री गुप्तिनंदी विधान
51. श्री छ्यानवे क्षेत्रपाल विधान
52. श्री भैरव पद्मावती विधान
53. श्री धर्मतीर्थ आरती संग्रह
54. सावधान (काव्य संग्रह)
55. महासती अंजना
56. कौडियो में राज्य
57. महासती मनोरमा
58. महासती चन्दनबाला
59. विलक्षण ज्ञानी (आचार्य श्री कनकनंदी जी चरित्र कथा)
60. वात्सल्य मूर्ति (गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी स्मारिका)
61. धर्मतीर्थ प्रवेशिका (भाग-1)

सी.डी.

1. श्री सम्मेदशिखर सिद्ध क्षेत्र पूजा (सी.डी.)
2. श्री रत्नत्रय आराधना व महाशांति धारा (डी.वी.डी.)
3. श्री नवग्रह शांति चालीसा (सी.डी.)
4. श्री बाहुबली पूजा (सी.डी.)
5. ये नवग्रह शांति विधान है (सी.डी.)
6. गुप्तिनंदी गुणगान (सी.डी.)
7. वात्सल्यमूर्ति माँ राजश्री (डी.वी.डी.)
8. मेरे पारस बाबा (डी.वी.डी,)
9. देहरे के चन्दा बाबा (एम.पी. 3)
10. श्री कुन्थु महिमा (डी.वी.डी.)
11. कनकनंदी गुरुदेव तुम्हारी जय हो (एम.पी.3)
12. गुप्तिनंदी अभिवन्दना (डी.वी.डी.)
13. जयति गुप्तिनंदी डाक्यूमेन्ट्री (डी.वी.डी.) I,II
14. श्री गुप्तिनंदी संघ हिट्स
15. श्री रत्नत्रय जिनार्चना

* * *